आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता

संपादक
प्रो. खेमसिंह डहेरिया
सुमन रानी
संजय कुमार

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता

HINDI SAHITYA ME RASHTRIYTA

By ***Prof. Khemsingh Daheriya, Suman Rani, Sanjay Kumar***

© प्रकाशक

ISBN : 978-93-91602-71-0

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2022

कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 300/- (भारत, नेपाल)

मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

मुद्रक : श्रीबालाजी ऑफसेट, ई-15, सेक्टर-ए 5/6ए ट्रोनिका सीटी, गाजियाबाद, उ.प्र.

हिंदी सिनेमा में राष्ट्रवाद का विकास

अनिता विश्वनाथ चौधरी
जी. के. जोशी (रात्रीचे)
वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

पिछले 70 सालों में हिंदी की कई यादगार फिल्मों ने लोगों में देशभक्ति भाव , शौर्य और देश के विषय स्वतंत्रता संघर्ष, आक्रमण और युद्ध, खेल, प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास, विद्रोह आदि रहे है। लेकिन सबके मूल में भारतीय होना और देश के प्रति कर्तव्य का भाव रहा है। लेकिन आज के बॉलीवूड में कम संख्या में देशभक्ति की फिल्में बन रही है। लेकीन आज के बॉलीवुड में कम संख्या में देशभक्ति की फिल्में बन रही है। पुराने जमाने के बम्बई फिल्म उद्योग में देशभक्ति फिल्मों की संख्या अधिक हुआ करती थी। भारत में फिल्म उद्योग स्वतंत्रता आंदोलन के समय उभरा 19वीं शताब्दी के नाटक की तरह इस बात की प्रबल संभावना थी की फिल्मों के माध्यम से देशभक्ति की भाव का संचार किया जा सकता है। 1876 में लॉर्ड नॉर्थबुक प्रशासन ने मंच से राजदाह दृश्य खत्म करने के लिए नाटक प्रदर्शन अधिनियम लागू किया था। इसी तरह ब्रिटिश शासन ने सेंसर कार्यालय और पुलिस के माध्यम से फिल्मों पर कडी नजर रखी। वर्ष 19 43 में रामचंद्र नारायण जी द्विवेदी उर्फ कवी प्रदीप के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट निकला । यह वारंट बॉम्बे टॉकिज की फिल्म 'किस्मत' में भारत छोडो आंदोलन के समर्थक में अप्रत्यक्ष रूप में शासन के विरुद्ध लिखे गाने को लेकर जारी किया गया था। यह गाना था "आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिन्दूस्तान हमारा है। इसी गाने में आगे लिखा गया है। शुरू हुआ है जंग तुम्हारा जाग उठो हिंदुस्तानी, तुम न किसी के आगे झुकना जर्मन हो या जापानी। दुसरे विश्व यूद्ध (1939-1945) में भारत मित्र राष्ट्रों की और था और वास्तविक रूप में जर्मनी और जापान का शत्रु था। 1942 में सिंगापूर

और वर्मा के लड़खड़ाने के बाद भारत में जापानी आक्रमण की चिंता वास्तविक होने लगी। लेकिन अंग्रेज चलाक तरीके से समझते थे कि जंग का मतलब स्वतंत्रता संघर्ष है और विदेशी का जिक्र गाने में अंग्रेजो के लिए किया गया है। गिरफ्तारी से बचने के लिए कवि प्रदीप भूमिगत हो गए।

15 अगस्त, 1847 को स्वतंत्रता की घोषणा के साथ इस तरह की बाधाएं दूर हो गई। लेकिन राष्ट्रवाद के विषय पर हमने फिल्मों को बनने नही देखा। स्वतंत्रता के लंबे संघर्ष के बाद स्वतंत्र देश में देशभक्ति फिल्म का न बनना एक विषय रहा। ऐसा इसलिए कि तुलनात्मक दृष्टी से 1952 की मिस्त्र की क्रांती पर अनेक फिल्में बनी और बांग्लादेश की मुक्ति पर भी फिल्में बनी। इस संबंध में कुछ अपवाद भी है । वजाहत मिर्जाने शहीद फिल्म का लेखन किया और इनका निर्देशन रमेश सहगल ने किया । इसफिल्म ने 1948 में अच्छा व्यवसाय किया। इस फिल्म का गीत 'वतन की राह में वतन के नौजवा शहिद हो' कमर जलालावादी ने लिखा था । 1950 में सबसे अधिक कामयाब फिल्म थी समाधि। इसका निर्देशन भी रमेश सहगल ने किया था। कहा जाता है कि यह फिल्म नेता जी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज से जुड़ी सच्ची घटना पर आधारित थी। उसी वर्ष आजाद हिंद फौज पर एक और फिल्म आई। यह फिल्म थी पहला आदमी और इसका निर्देशन महान निर्देशक विमल रॉयने किया था।

1952 में बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास पर बनी फिल्म 'आंनद मठ' आई। इसका निर्देशन हेमेन गुप्ता ने किया था। हेमेन गुप्ता स्वतंत्रता सेनानी थे और वह वर्षो जेल में रहे। हेमेन गुप्ता फांसी से बच गए थे। बाद में उन्होंने फिल्म निर्माण की और कदम बढ़ाया। आनंद मठ दस बड़ी फिल्मों में शुमार नहीं हुई। बडी फिल्मों ने आन, बैजू, बावरा, चाल तथा दाग थी जिनमें संगीत, रोमांस, सस्पेंस और सामाजिक ड्रामा था । 1940 और 1950 के दशक में सामाजिक, रोमांटिक, संगीतप्रधान, एक्शन, सस्पेंस, पौराणिक फिल्में बनी देशभक्ति और राष्ट्रवादी फिल्में अपवाद थी । 1953 में शोहराब मोदी ने 'झांसी की राणी' फिल्म बनाई लेकिन वह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नही हुई। 1953 में शिर्ष पर नंदलाल जसवंत लाल की फिल्म अनारकली रही। इसी तरह 1953 में बकिमचंद्र चटर्जी के ऐतिहासिक उपन्यास पर बनी दुर्गेश नंदिनी फिल्म भी असफल साबित हुई। इसका अर्थ यह नहीं है की दर्शक राष्ट्रवादी भावना से मुह मोड़े। इसका अर्थ सिर्फ यही थी कि भारत के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता अकेली चुनौती नहीं थी।

इससे पहले 1946 चेतन आनंद की फिल्म नीचा नगर में यह दिखाया

गया था कि किसी तरह धनवान लोग गाँव में रहने वाले गरिबों का शोषण करते थे। इस फिल्म को कांस फिल्म समारोह में प्रवेश मिला । 19 53 में ख्वाजा अहमद अब्बास ने राही फिल्म का निर्देशन किया। इस फिल्म ने असम के चाय बगानों में अंग्रेजी मालिकों द्वारा मजदुरों के शोषण को दिखाया गया था। स्वतंत्रता के बाद फिल्मों को अपना जीवन मिला । 19 40 और 1950 में लोगों की पसंद को देखा गया। नए गणराज्य की अपनी समस्याएं भी और लोगों का ध्यान उसी ओर था। 19 50 के दशक की सबसे कामयाब फिल्म महबूब खान की 'मदर इंडिया' 1957 रही । इस फिल्म में गाँव की गरीब महिला राधा (नरगिस अभिनीत) के दो बच्चों के पालने और धुर्त साहुकार के विरुद्ध संघर्ष को दिखाया गया था। 19555 की 'श्री 420' । इस फिल्म में गरीबो का खुन चुसने वाली पोंजी योजनाओं की विपती को दिखाया गया था । 1959 में ऋषिकेश मुखर्जी ने अनाड़ी फिल्म बनाई । इस फिल्म के हिरो थे राज कपूर। इस फिल्म में शहरों में घातक जहरीली दवाईयों के भयावह परिणाम दिखाए गए थे। स्वतंत्र भारत की समस्याओं को फिल्मों में जगह मिली।

1960 के दशक में यह जाहिर हुआ कि भारत को केवल आंतरिक चुनौतियों का ही सामना नहीं करना है। सैन्य दृष्टी से भी भारत को तैयार रहना है। देश ने 60 के दशक में 1960 में गोवा मुक्ति युद्ध, 1962 में चीनी आक्रमण और 1965 में पाकिस्तानी आक्रमण को झेला था। फिर 1971 में भी भारत-पाक यूद्ध हुआ। इन यूद्ध से हम शौर्य, देशभक्ति और बलिदान को लेकर सचेत हुए। उसके बाद से अनेक देश भक्ति फिल्में आई। इसमें हकीकत (1964), हमसाया (1968), प्रेम पुजारी (1970), ललकार (1972), हिंदुस्तान की कसम (1997) और एलओसी करगिल (2003), टैंगो चार्ली (2005), शौर्य (2008), 1971 (2007), गाजी अटैक, आदी जैसी फिल्में बनी। इन फिल्मो से साधारण भारतीय लोगों के मन में सेना के प्रति सम्मान बढ़ा। 1960-70 के दशक में अभिनेता हरिकिशन गिरी गोस्वामी उर्फ मनोज कुमार ने फिल्मों में सकारात्मक और देशभक्ती के विचारों का जिम्मा संभाला। इसिलिए उन्हें 'भारतकुमार' का उपनाम भी मिला। उन्होंने फिल्म शहिद, क्रांतिकारी भगत सिंह की भूमिका अदा की। उनकी उपकार, जैसी फिल्मों ने फौज की नोकरी छोड़ चुके व्यक्ति के काला बाजारी और नकली दवाओं के जाल में उलझने के खतरों को पश्चिम में भारतीय संस्कृती की अलग जगा ले रखी।

1970 के दशकतक, भारत को पश्चिम में पिछड़ा और प्रतिगामी देश समझा जाता था। मनोज कुमार ने पूरब और पश्चिम में भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता

का सामने रखा। उदारीकरण के पश्चात स्थिति में बदलाव आया जिसमें सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रदर्शन ने भारत को वैश्विक स्तर पर उदीयमान दर्जा दिलाया। 1960 के दशक के मध्य के बाद से, अमरिका और ब्रिटेन जैसे पश्चिम के औद्योगिक देशों ने जाने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या में जाने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या में वृद्धी हुई है। इसमे सुदूर राष्ट्रवाद की भावना के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके द्वारा भारतीय अपनी पहचान पर गर्व करने लगे। 'आई लव माई इंडिया' परदेस जैसे गीतों ने इस भावना को बरकरार रखा। लगान, चक दे इंडिया, भाग मिल्खा भाग, दंगल, सर्जिकल स्ट्राईक जैसी फिल्मो ने देशभक्ति की भावना जगाने के लिए खेलो का सहारा लिया। इस संबंध में 29 जून 1991 में कोलकत्ता में आईएफार शिल्ड मैच में मोहन बागले की ईस्ट यॉर्कशायर रेजिमेंट पर जीत की घटना पर आधारित अरुण रॉय की बंगाली फिल्म इगारों या द इमॉर्टल इलेवन का उल्लेख भी किया जाना चाहिए। यह किसी ब्रिटीश टीम पर किसी भारतीय फुटबॉल क्लब की पहली जीत थी। इस घटना के शताब्दी वर्ष के अवसर पर आई यह फिल्म उसके प्रति श्रद्धांजली स्वरूप थी । देश भक्ति के प्रति फिल्मकारो का आकर्षण बरकरार है और यह इस बात साबित होता है की वर्ष 2002 में भगतसिंह के बारे में तीन हिंदी फिल्मों का निर्माण किया गया। ये फिल्मे भी राजकुमार संतोषी की 'द लिजेंड ऑफ भगतसिंह', गुड्डू धनोवा के निर्देशन में बनी 23 मार्च, शहीद और सुकूमार नायर की शहीद-ए-आजमा 2004 में विख्यात निर्देशक 'याम बेनेगल की फिल्म नेताजी सुभाष चंद्र बोस द फॉर्गाटन हीरो आई। लेकिन बॉक्स ऑफिस पर कामयाबी के लिए देशभक्ती ही अकेला जादू नही है, जैसा कि चटगाँव शस्त्रगार विद्रोह पर आधारित आशुतोष गोवारिकर की फिल्म खेले हम जी जान से की नाकामयाबी से साबित हुआ। लेकिन इसमें कोई संदेह नही है की, राष्ट्रवाद सिनेमा के रूपटले पर्देपर आने के नये रास्ते तलाशना जारी रखेगा। उसे दर्शकों को लुभाने के लिए लगातार खुद नये सिरे से खोजना जारी रखना होगा।

प्रो. खेमसिंह डहेरिया

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी, पी-एच.डी. यू.जी.सी. नेट, बी.एड.
सम्प्रति : कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
प्रकाशित पुस्तकें : 21 पुस्तकें प्रकाशित
उपलब्धियाँ/सम्मान/पुरस्कार : 29 से ज्यादा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित। 115 शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। 101 शोध पत्रों का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सेमीनारों में वाचन। 73 से ज्यादा व्याख्यान।
संपर्क : कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

सुमन रानी

जन्म : तंदवाल (बराड़ा), अम्बाला, हरियाणा
शिक्षा : एम.ए. राजनीति- शास्त्र (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र), एम.ए. हिन्दी (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र), एम.एड.(कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र), एम.फिल.हिन्दी (द.भा.हि.प्रचार सभा मद्रास) पीएच.डी. हिंदी विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास
पुरस्कार व उपाधि : 25 से ज्यादा सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त
प्रक्राशित पुस्तके : 21 से ज्यादा पुस्तक प्रकाशित
संप्रति : गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल
संपर्क : sumanbhati808@gmail.com

संजय कुमार

शिक्षा : बी.ए. एम.ए (हिंदी, राजस्थानी), यूजीसी नेट (हिंदी) पीएच.डी.(अ.), हिंदी विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास
सम्मान : 20 से ज्यादा सम्मान
पुस्तकें : 13 पुस्तकें प्रकाशित
अन्य : राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में संयोजक, संचालन एवं सहभागिता, प्रतिष्ठित रिसर्च जर्नल पत्रिकाओं में शोध-पत्र प्रकाशित
सम्पर्क : 8769406872
email : Sanjaydholpuria51@gmail.com

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद
www.sahityasanchay.com
e-mail : sahityasanchay@gmail.com
Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 300
ISBN : 978-93-91602-71-0